Vol 7 Issue 1 Oct 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2017

भारतीय संत परम्परा में संत रैदास : एक विवेचन

डॉ. निशा वालिया
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून.

प्रस्तावना –

अब कैसे छूटै राम, नाम रट लागी।
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग अंग बास समानी।
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत् चन्द–चकोर।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।

भारतीय संत परंपरा में महान संतों का आविर्भाव एक स्थायी महत्त्व रखता है। संत साहित्य का महत्त्व सिर्फ आध्यात्मिक ज्ञान की उपलब्धि तक ही सीमित नहीं है, प्रत्युत उसके प्रकाश में भौतिक जीवन में शुद्ध आचरण, सामाजिक, साम्प्रदायिक सद्भावना आदि के लिए अद्भुत प्रेरक शक्ति निहित है। इसकी पृष्ठभूमि अध्यात्मिक दर्शन पर आधारित है। संत साहित्य में प्राप्त प्रचुर साहित्य सामग्री साहित्य–मनीषियों के चिंतन–मनन, रचनात्मक तर्क–वितर्क एवं भावी निर्माण की आधार शिला है। संत साहित्य के प्रकाशित गगन मंडल के अमूल्य नक्षत्र रैदास का जन्म ऐसे समय में हुआ जब समाज में निम्नवर्ग की जनता की अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी तथा सर्वत्र कर्मकांडियों, ढोंगियों, अवसरवादियों आदि की प्रधानता थी ओर वे अपने विधि–निषेधों से जनता को मूक, पंगु और लाचार बनाकर शोषण करते थे। इन्होंने जनता को भेड़–बकरी बना रखा था और इस प्रकार उसके आत्मबल, आत्मविश्वास और पुरुषार्थ को हरण किया था।

कबीर के सामयिक सन्तों में रैदास का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। रैदास ने माया का परित्याग कर भगवान दर्शन में सफलता प्राप्त की। सन्त रैदास के विचार अत्यन्त उदात्त और उदार थे। तर्क और वितर्क द्वारा प्राप्त कोरे ज्ञान के स्थान पर सत्य की पूर्ण अनुभूति ही इनके लिए महत्त्वपूर्ण थी। इस साधन से ही मनुष्य राम का परिचय पाकर दुविधा से मुक्त होता है और पिंड का रहस्य जानकर जल के ऊपर तूम्बे की भाँति सदा विश्व में विचरण करता है। रैदास कवि ने इस सत्य को आत्मसात करते हुए कहा है–

जस हरि कहिए तस हरि नाहीं, है अस जस कुछ तैसा।

किन्तु फिर भी इस सत्य का आभास दृश्यमान प्राकृतिक वैभव में इस प्रकार मिलता है जिस प्रकार जल राशि में उसकी वीचियाँ।

सन्त रैदास की भक्ति 'प्रेम भगति' कही जाती है। इसका मूलाधार है अहंकार की निवृत्ति। अहं की भावना साधक के पथ की सबसे बड़ी बाधा है। 'भक्तमाल' के रचयिता नाभादास के अनुसार– "इन्होंने सदाचार के जिन नियमों के उपदेश दिए थे, वे वेदशास्त्रादि के विरुद्ध न थे और उन्हें नीर–क्षीर विवेक वाले महात्मा भी अपनाते थे।" रैदास की निर्मल वाणी ने सन्देह की अनेक गुत्थियों के रहस्यों को सुलझाया है। निम्नवर्ग के जन्म लेने के पश्चात् भी उत्तम जीवन शैली, उत्कृष्ट साधना पद्धति तथा उल्लेखनीय आचरण के कारण सन्त रैदास आज भी भारतीय सन्तों में स्मरणीय है।

रैदास का जन्म वाराणसी के समीप मांडूर नामक गाँव में रघ्घू और घुरबिनिया नामक चर्मकार दंपती के यहाँ हुआ था। रैदास ने अपनी जाति का उल्लेख निसंकोच और जीवटता के साथ बार–बार किया है–

मेरी जाति कमीनी पाँति कमीनी, ओछा जनमु हमारा।
तुम सरनागति राजा राम चन्द्र कहि रविदास चमारा।।

संत रैदास ने अपने व्यावसायिक उपकरणों को एक सांगरूपक में साधनात्मक प्रतीक बनाया है–

चमरटा गाँठि न जनई, लोग गठावै पनही।।
x x x x
रविदास जपै राम नामा। मोहि जम सिउ नाही कामा।।

रैदास शैशवास्था से ही भक्ति चेतना से सम्पन्न थे। पैतृक व्यवसाय में अधिक रूचि न लेने के कारण इन्हें परिवार से अलग कर दिया गया था।

ब्रिग्स के कथनानुसार 'रैदास 12 वर्ष की आयु से ही सत्संग करने लगे थे। उसी समय से मिट्टी से बनी राम जानकी की मूर्ति को पूजने लगे थे'

जिस युग में रैदास हुए थे, शास्त्रीय शिक्षा–दीक्षा द्विजातियों विशेषकर ब्राह्मणों तक सीमित थी। अत्यंजों को वेदों व शास्त्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं था। किंतु रैदास को नामदेव कबीर तथा अन्य संत कवियों के काव्य का ज्ञान था।

रैदास के दीक्षा गुरु रामानंद जी थे। ऐसा मानने की परंपरा रही है।

तब रामानंद बिलंब न कीनौ। माथ हाथ चमरा कै दीनौ। (रैदास परचई)

रैदास ने जात्याभिमानी ब्राह्मणों से कडा संघर्ष किया अपनी निश्छल, उदात्त और अनन्य भक्ति के बल पर उन्होंने ब्राह्मणों का सफल प्रतिरोध किया था। अंततः उच्च कुलीन सवर्ण ब्राह्मणों ने उनकी उत्कट भक्ति को मान्यता दी और सम्मानपूर्वक दंडवत किया था–

जाके कुटंब के ढेढ सभ ठोर ढोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस–पासा।
आचार सहित विप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासानुदासा।

जब वर्ण–व्यवस्था टूटकर जाति–व्यवस्था की संकीर्णता, जकड़न और ऊँच–नीच की भावना में बदलकर समाज को जर्जर और विगलित कर रही थी, ब्राह्मणों और शूद्रों में मनोमालिन्य बढ़ रहा था। एक व्यक्ति दुष्कर्मों में प्रवृत्त होते हुए भी उच्च कुलोद्भव होने के नाते सम्मान का पात्र और दूसरा सत्कर्मी होते हुए भी उपेक्षित, घृणा और तिरस्कार का पात्र समझा जा रहा था, अंत्यजों को न वेद पढ़ने का अधिकार था और न देव–पूजा का उस समय। रैदास ने इस पीड़ा को झेला था। उनकी कई बार ब्राह्मणों से टकराहट हुई। उनकी भक्ति–भावना को चुनौती दी गई। 'रैदास–परचई' और 'भक्तमाल' में उद्धृत घटनाओं से एक बात स्पष्ट रूप से उभरकर आती है कि उनका पुरोहित–वर्ग या ब्राह्मणवाद से कड़ा संघर्ष हुआ था। अपनी उत्कट भक्ति, तन्मयता, सच्चरित्रता, तर्क–पद्धति से उन्होंने परंपरागत मान्यताओं को चुनौती दी। अंततः उन पर विजय पाई।

भारत का मध्यकालीन समाज धार्मिक अंधविश्वासों, बाहरी कर्मकांडों और पाखंडों में उलझा हुआ था। मुसलमान शासकों की क्रूरता और धर्मांधता से हिंदुओं और मुसलमानों में विद्वेष व संघर्ष बढ़ रहा था। नैतिक पतन अपनी चरम सीमा पर था। करों का बाहुल्य था। कानूनों के कठोर शिकंजे थे। शासन अस्थिर थे। अत्याचार और उत्पीड़न निरंतर बढ़ रहे थे। अन्याय, उत्पीड़न, शोषण और तिरस्कार का केंद्र–बिंदु वह निम्न और निर्धन तबका था, जिसमें रैदास जन्मे थे। अपने पेशे से प्रतिबद्ध रहकर उन्होंने नैतिक आचरण के वे प्रतिमान स्थापित किए जिनसे प्रभावित होकर उच्चकुलीन ब्राह्मण ही नहीं, पूरा समाज उन्हें सम्मान देने को बाध्य हो गया था।

नामदेव की तरह प्रारंभ में रैदास सगुणोपासक थे। परचई के अनुसार सालिगराम (बटिया) की पूजा करते थे। बाद में कबीर के संसर्ग से इनका रुझान निर्गुणोपासना की ओर हुआ। रैदास ने कबीर को अपना गुरु तथा कबीर ने रैदास को गुरु भाई के रूप में स्वीकार किया–

माखन मथि रु तत दिखलाया, भरम करम सब जाई
कहै रैदास पीर गुर मेरा, या मत तुम सूं पाई।।

रैदास ने परमार्थ साधना के लिए सत्संगति की महत्ता स्वीकार की जिन संतों के आने से आवास पवित्र हो जाता है, ऐसे संतों के चरण धोने से तन, मन और धन न्यौछावर करने से जीवन सार्थक होता है और व्यक्ति का उद्धार तो होता ही है– साथ ही जन्मजन्मान्तर के बन्धन भी कट जाते हैं–

कहै रैदास मिले निज दास, जन्म–जन्म के कटे पास।।

रैदास ने सत्संगति की चाहना करते हुए, साधु–निंदक की कटु आलोचना की है।

संत आचरण संत चो मारगु, संत च ओल्हग ओल्हगणी।
रैदास ने जीवन और जगत की नश्वरता और निस्सारता के अनेक प्रभावी चित्र उपस्थित किए हैं–

जो दीसै सो सकल बिनास, अण दीठै नाहीं बिसवास।
काचौ कुंभ भरयौ जल जैसैं, दिन दिन घटतौ जाइ रे।

संत रैदास ने भक्ति के अवरोधक काम, मोक्ष, परनारी संग, लोभ, चंचल मन, क्रोध, मद, माया, अहंकार आदि का निषेध किया है।

'प्रत्रिया गालौ जांणि रे' या पर त्रिया संग, भलौ जे होवै, तौ राणां रांवण देखि रे'

जैसे कथनों से स्पष्ट होता है कि वे अंतःकरण की शुचिता, नैतिकता और आदर्शगत मूल्यों के समर्थक थे।

रैदास के कथनों में अनुभवजन्य सच्चाई है–

इहि तनु ऐसा जैसे घास की टाटी, जलि गइओ घासु रलि गइयो माटी।

साथ ही रैदास ने भक्ति के लिए बाह्य साधनों जैसे नृत्य संगीत, तप, चरण वन्दना, सन्यास और तीर्थ यात्रा का निषेध किया है–

कहा भयौ नाचैं अरू गामैं, कहा भयौ तप कीन्हैं।

कहा भयौ जे चरण पखाले, जो परम तत नहीं चीन्हें।

रैदास ने वेदों की आलोचना करते हुए सात्विक भाव की भक्ति पर बल दिया है–

मोर कुचिल जाति, कुचिल में वास, भगत चरन हरिचरन निवास।
चारिउ वेद किया खंडौति, जन रैदास करै डंडौति।।

रैदास की भक्ति प्रेममूलक है। उन्होंने परमतत्त्व को पहचानने, 'अनभै' रहने और संसार के कार्यकलापों को भ्रम मानने पर बल दिया है–

मन की महिमा सब कोई कहै, पंडित सो जे अनभै रहै।

रैदास ने अपने काव्य में 'भ्रम' पर सर्वाधिक बल दिया है–

भ्रम सुधि सरीर जौ लौं, भ्रम नाउं बिनाऊँ,
भ्रम भणि रैदास तौ लौं, जो लौं चाहे ठांऊँ।।

रैदास की प्रेम भक्ति में तन्मयता, सरसता, समर्पण, आत्मनिवेदन, आत्मग्लानि और एकांतिकता है। रैदास सम्बन्धों की समग्रता अपने प्रभु से जुड़ने में नहीं मानते–

मैं हर प्रीति सबनि सूं तोरी, सब स्यौ तोरि तुम्हैं स्यूं जोरी।
सब परहरि मैं तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा।।

रैदास की प्रेम–भक्ति का मूलाधार अहंकार की निवृत्ति ही है। ईश्वरीय प्राप्ति के लिए अपने तनमन को भूलना आवश्यक है–

आपा खोयां भगति होत है, तब रहै अंतरि उरझाई।।

रैदास ने मानव जीवन की दुलर्भता को ज्यादा बल नहीं दिया है केवल एक पद में इस दुर्लभ मानव देह के विषय में कहा है–

त्रिजुग जोनि अचेत संम भूमि, पाप पुण्य न सोच।
मनिषा अवतार दुरलभ, तिहूँ संकुट पोच।।

आध्यात्मिक चिंतन और साधना–पद्धति में अपनी निर्मल भक्ति, शुद्ध आचरण और नैतिकता के लिए प्रसिद्ध रैदास संत–काव्य परम्परा में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। अपने चारों ओर के वातावरण में रैदास ने जो कुछ सुना, देखा तथा समझा और सत्य साधना द्वारा जो अनुभूति प्राप्त की उसे अपने साहित्य में चित्रित किया।

धार्मिक रूढ़ियों, कर्मकांडों और पुरोहित वर्ग की निरंकुशता का विरोध कर ऐसे भक्ति–मार्ग का प्रतिपादन किया जो सर्वसुलभ सर्वग्राही और ऐसे व्यापक मानव–धर्म से अनुप्रेरित थी जिसमें न कोई शासक रहता है, न शासित। न कोई अमीर रहता है और न गरीब, न कोई हिंदू होता है न मुसलमान। न कोई ब्राह्मण रहता है और न कोई शूद्र। जिसके अपनाने पर न कोई शोक रहता है और न व्यथा–

अब हम खूब बतन घर पाया। उहाँ खैर सदा मेरे भाया।।
बेगमपुर सहर कर नाउँ, फिकर अंदेस नहीं तिहि ठांव।।
नहीं तहाँ सीस खलात न मार, है फन खता न तरस जवाल।
आंवन जांन रहम महसूर, जहाँ गनियाब बसैं माबूँद।

रैदास ने निर्धनता और संपन्नता दोनों देखी थीं। संपन्नता में देवालय की स्थापना से लेकर साधु–संतों को मान–सम्मान सम्मिलित था। हजारों साधु–संत उनके यहाँ आश्रय पाए हुए थे। स्थिति ऐसी आई कि उन्हें सब–कुछ छोड़कर पुनः अपनी जीविका के लिए पैतृक व्यवसाय अपनाना पड़ा। उनके व्यक्तित्व में निस्पृहता, त्याग और अनासक्ति प्रबल थी। इसीलिए उनके समकालीन संतों ने उन्हें 'माया–त्यागी' कहा था।

रचनाओं और जीवन–प्रसंगों से रैदास की विनयशीलता, आडंबरहीनता, समन्वित एवं संतुलित विचारधारा, सच्ची भक्ति, निर्गुण और सगुण विचारधारा के प्रति आदर–भाव व्यक्त होता है। कबीर ने 'संतनि में रविदास संत' कहकर उनके महत्त्व को स्वीकार किया है। सेन, पीपा, धन्ना, दादूदयाल, रज्जब, नाभादास, प्रियादास, अनंतदास और मीराबाई ने उन्हें ससम्मान स्मरण किया है।

रैदास मूलतः सन्त थे, फलस्वरूप कबीर की भाँति उनका बल भी कलापक्ष की अपेक्षा प्रतिपाद्य पर अधिक रहा है। अन्य ब्रह्ममार्गी कवियों की भाँति उनके लिए भी निर्गुण ब्रह्म अनुभूति और जिज्ञासा का विषय है। कभी वे उसकी सत्ता और स्वरूप की अभिव्यक्ति में अपनी

असमर्थता स्वीकार करते हैं, तो अन्यत्र उसे एक सुनिश्चित रूप देने के लिए उन्होंने ईश्वर के समस्त रूपों में ऐक्प और अभिन्नता के दर्शन भी किए हैं। मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा आदि बाह्य विधानों का विरोध कर उन्होंने अभ्यान्तरिक साधना पर बल दिया। अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए कवि रैदास ने सरल, व्यावहारिक ब्रज भाषा को अपनाया है जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ीबोली और उर्दू–फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है।

जिस समय भारतवर्ष की सांस्कृतिक अवस्था अत्यन्त उतार पर थी। सौभाग्यवश उसी समय इस युग के महागुरु रामानंद से रैदास की पहचान हो गई और जो असंभव था उसे संभव बनाने में रैदास ने कोई कसर नहीं छोड़ी। धार्मिक और साम्प्रदायिक संकीर्णताओं के लिए वे अपने शब्दों से चोट करने लगे। उनका कण्ठ किसी कवि का कण्ठ न होकर एक सुधारक सन्त का कण्ठ बन गया। उनकी वाणी से प्रेम विश्वास, ज्ञान, चिन्तन आदि की धारा फूट पड़ी। और इन्हीं तत्त्वों की सहायता से मन को निर्मल कर ईश्वरीय प्रेम की प्राप्ति रैदास का उद्देश्य था।

"मन चंगा तो कटौती में गंगा।"

संत रैदास के जीवन और दर्शन पर शोध करना एक दुष्कर कार्य हैं क्योंकि एक ओर उनकी भाषा शैली सहज, सरल और प्रवाही है, वहीं दूसरी ओर उसके अर्थ अत्यन्त गंभीर हैं। कम से कम शब्दों में बड़ी से बड़ी ओजस्वी वाणी रैदास की मौलिक विशेषता है। ऐसा वही व्यक्ति कर सकता है जो अपने विचार और भावों के विषय में कोई द्वन्द्व नहीं रखता हो जो पूरी तरह से सत्यान्वेषक बन गया हो।

उत्तर भारत में कबीर, रैदास, नानक और दादूदयाल जैसे संतों के माध्यम से एक विराट सांस्कृतिक आंदोलन उठ खड़ हुआ था, जिसने धार्मिक रूढ़ियों, सामाजिक विगलित मान्यताओं, जातिवाद, संप्रदायवाद, आर्थिक विषमता, शोषण और निरंकुश अत्याचारों के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई थी और प्रतिगामी शक्तियों का डटकर सामना किया था। सही मायने में यह भारत का प्रथम प्रगतिशील आंदोलन था, जिसने निम्न और मध्य वर्ग के तबके को आंदोलित किया था। भारत में नव जागरण, नव स्फूर्ति और नई ऊर्जा देने के लिए इन कविसाधकों के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। इसीलिए सन्त रैदास की प्रासंगिकता भारतीय सन्तों की परम्परा में कल भी थी और आज भी है और स्वस्थ एवं सबल समाज के निर्माण हेतु इसकी प्रासंगिकता बराबर बनी रहेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

रैदास रचनावली – डॉ. गोविन्द रजनीश, सम्पादन
हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल
भारतीय संस्कृति – डॉ. राधाकृष्णन
संतकाव्य में विद्रोह का स्वर – किरणनन्दा
सिद्धवाणी – स्वामी मुक्तानन्द
द चमार्स, रिलीजन ऑफ इंडिया – जी.डब्ल्यू ब्रिग्स पृ. 208
हिन्दी संत साहित्य की परम्परा – डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल
हिन्दी शब्द कोश – डॉ. धीरेन्द्र वर्मा (सम्पादक)
विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com